इण्डियन
थिऑसफिस्ट

मार्च 2024 | खण्ड 121 | अंक 3

विषयवस्तु

आगे का एक कदम — 5–7
प्रदीप एच. गोहिल

भूमि और हम — 9–14
टिम बॉयड

पाइथागोरस, उनका जीवन और दर्शन — 15–26
यू. एस. पांडेय

समाचार और टिप्पणियां — 27–30

सम्पादक — प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक — श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच गोहिल

आगे का एक कदम

आध्यात्मिकता एक विश्वव्यापी दृष्टिकोण और जीवन का एक मार्ग है इस विश्वास के आधार पर कि जो हम अपने संवेदनों से जान पाते हैं उसके परे भी जीवन है, उद्देश्यहीन क्रियाकलापों की अपेक्षा यह विश्व हेतु प्रयोग करनें के लिये अधिक है, मस्तिष्क की विद्युतीय कंपनों की अपेक्षा चेतना के लिये अधिक है, शरीर और उसकी आवश्यकताओं की अपेक्षा वह हमारे अस्तित्व के लिये अधिक है। आध्यात्मिकता सामान्यतया यह विश्वास सम्मिलित करती है कि कोई उच्च प्रकार की चेतना इस संसार को और मृत्यु के बाद के जीवन को संचालित करती है। यह मनुष्य की अर्थ, शांति, रहस्य, और अंतिम सत्य के लिये गहनतर क्षुधा को संतुष्ट करनें के लिये अस्तित्व में है।

एक ताले को गलत कुंजी से खोलनें के प्रयास में आप परेशान होंगे और ताला भी क्षतिग्रस्त कर लेंगे, किन्तु आप उसे खोलनें में सफल नहीं होंगे जब तक आप उचित कुंजी से उसे खोलनें का प्रयास नहीं करेंगे। हमें जो चाहिये वह आध्यात्मिक अर्थ है जो हमारी आत्मा के लिये श्रेष्ठ है। हम सभी 'आध्यात्मिक' शब्द का अर्थ जानते हैं क्योंकि हम सभी आध्यात्मिक संगठन जिसका नाम थिऑसफिकल सोसाइटी है जिसका उद्देश्य लोगों को उनकी पूरी शक्ति तक विकसित होनें में सहायता करना है। आध्यात्मिकता एक प्रतीति या विश्वास के भाव की पहचान करती है कि हमसे अधिक महान भी कुछ है, कुछ ऐसा जो मानवीय संवेदी अनुभवों से अधिक है, और हमसे अधिक महान है जिस ब्रह्माण्डीय या दिव्य प्रकृति के हम संभाग हैं।

आध्यात्मिकता का एक दृष्टिकोण यह है कि यह हमारे जीवन के बारे में उस ज्ञान से सम्बन्धित है जो स्वार्थ और एकत्रण की ओर ले जाने वाली सांसारिक दैहिक आवश्यकताओं के दैनिक अस्तित्व से परे है। इसका अर्थ यह जानना है कि हम वैश्विक जीवन के उद्देश्यपूर्ण अनावरण के एक महत्वपूर्ण अंग हैं।

यह प्रायः अंतिम रहस्य जो जीवन है, विश्व और विश्व की प्रत्येक वस्तु है, के चैतन्य अनुभव की खोज आध्यात्मिक खोजी की विशेषता होती है। इसका निन्दक अपनें को बौद्धिक खोज में सीमित रखता है जबकि आध्यात्मिक व्यक्ति समझता है कि समझ के अन्तर्गत आने वाले तर्क और तर्कबुद्धि से भी अधिक कुछ उन गहन सत्यों में है जिन्हें हम नहीं जानते हैं।

चार महान सत्यों में बुद्ध नें व्याख्या की है कि मानव प्रकृति किस प्रकार दुख उत्पन्न करती है और इस अचेतनता के असम्भावी कष्ट से परे कैसे जाया जा सकता है और प्रज्ञान, सौम्यता और मान्यता की स्थिति को पहुंचा जा सकता है। उनका अष्टांगिक मार्ग चैतन्य रूप से इसकी अड़चनें ओर आसक्तियों को निकाल कर सुख जिसकी सभी कामना करते हैं, प्राप्त करनें की विधि को स्पष्ट करता है। बुद्धिस्ट कुशलता पूर्ण कार्यो या स्वभाव की बात करते हैं। यही है जो हमें आध्यात्मिक जीवन के केन्द्र पर ले जाता है – उसमें आत्म सुधार के लिये अपनी अचेतनता और दुखों से ऊपर उठनें के लिये एक प्रबल प्रेरणा है, जो एक महानतर प्रकाश उत्पन्न करता है, कुशलता पूर्वक सोचनें और विश्वास करनें की क्षमता जो अन्धाधुन्ध और अपरिपक्वता से आचरण करनें से अलग होती है। इसे प्राप्त करनें का साधन है कि वस्तुओं को वे जैसी हैं वैसी ही मान लें न कि भावनाओं के आवेश में या आकर्षण, विकर्षण या उदासीनता से कार्य करें। दुख को 'वास्तविकता को जैसी है वैसी ही न मान लेनें के कारण' के रूप में परिभाषित किया गया है।

यह सब समझनें के बाद, हम आध्यात्मिकता की एक परिभाषा जो बुद्ध के मार्ग के समानान्तर है, के बारे में विचार कर सकते हैं। आध्यात्मिकता मानवीय अस्तित्व से आगे जानें की एक अकथनीय उत्तेजना है, जो अचेतन शक्तियों और स्वार्थ के बंधनों की सीमाओं से बाहर जाना चाहती है और अपनें और अपने सम्बन्धों में उच्चतर मूल्यों की खोज करना चाहती है। यह उन अभ्यासों को विकसित करना चाहती है जो हमें ऊपर उठनें और विस्तार करनें में सहायता करती है जो न केवल जंगम संसार की अच्छाई, वरन् अपनी नैतिकता और निर्देशन के लिये बाहर के स्थान पर अन्तर की ओर देखनें की प्रक्रिया के अभ्यास हैं। सबसे ऊपर, अर्थ यह है कि विचारों, शब्दों और कार्यों में अधिक प्रेमयुक्त और करुणामय मानव हो जाना है।

आध्यात्मिक विकास अपेक्षा करता है कि प्रतीति के आधार पर स्वतंत्रता के क्रमिक बढ़ते स्तरों को प्राप्त करना होता है, कि विचार सत्य नहीं हैं किन्तु अस्थायी मानसिक घटनायें हैं, जैसी वास्तव में हमारी भावनायें भी हैं। बढ़ती हुयी संख्या में लोग 'माइण्डफुलनेस काग्नीशन थिरापी' के माध्यम से इसकी प्रतीत कर रहे हैं, जो व्यक्तियों को 'यहां और अभी' लानें से ऐसा मानसिक परिवेश बनाता है, जिसमें यह गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि उसको चिंता और अवसाद से मुक्त करती है।

ऐसी अनगिनत विधियां हैं जो बताती हैं कि आध्यात्मिकता का अभ्यास कैसे करें और अपनी कुशलता का उत्थान करें। आध्यात्मिकता एक बहुत व्यक्तिगत अनुभव है और प्रत्येक व्यक्ति का आध्यात्मिक मार्ग अकेला हो सकता है। फिर भी कुछ तनाव मुक्ति की आध्यात्मिक विधियां अनेक लोगों को सहायक हुयी हैं वे चाहे जिस आस्था से सम्बन्धित रहे हों। आध्यात्मिक खोज के लिये कुछ विधियां जो प्रयोग की जा सकती हैं वे हैं –

ध्यान दें कि आप कैसा प्रतीत कर रहे हैं –

आध्यात्मिकता अपनानें का आंशिक अर्थ यह भी है कि मानवीय बननें का अर्थ क्या है, दोनों अच्छा और बुरा।

दूसरों पर फोकस करें –

अपनें ह्रदय को खोलें, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना और उन्हें सहायता करना आध्यात्मिकता के महत्वपूर्ण आयाम हैं।

ध्यान करें –

15 से 20 मिनट प्रत्येक प्रातः ध्यान के किसी रूप में लगायें।

माइण्डफुलनेस का प्रयास करें –

अधिक माइण्डफुल हो कर आप वर्तमान के बारे में अधिक जागरूक और सराहनायुक्त हो सकते हैं। माइण्डफुलनेस अपनें और दूसरों के बारे में अनुमान न लगानें के लिये प्रोत्साहित करता है और भूत काल और भविष्य के चिंतन से हटा कर वर्तमान में क्षण पर फोकस रखता है।

आध्यात्मिकता व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य और अर्थ की खोज में सहायक होती है। यह तनाव की परिस्थिति को नियंत्रित करनें में सहायक है। यह आशा और आशावाद को बढ़ाती है और व्यक्ति को आध्यात्मिक विकास के लिये तैयार करती है। आध्यात्मिकता का अभ्यास व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रगति में सहायता करता है और यह आगे का एक कदम होगा।

———————————————

टिम बॉयड

भूमि और हम

मैं आप के साथ कुछ ऐसे विचार साझा करना चाहता हूं जो सम्भवतः आपको कुछ पुरानें लगें। ''भूमि और हम''। जब हम संसार में चारो ओर देखते हैं भूमि जिसमें हम रहते हैं वह हमें बहुत महत्वपूर्ण लगती है। इसका कोई महत्व नहीं है कि हम कहां से हैं और इतिहास के किसी भी बिन्दु पर देखनें का प्रयास करें, भूमि कुछ उच्चतम मानवीय अभिव्यक्तियों का स्रोत है।

एक ओर एक हीरो जैसी राष्ट्रभक्ति और प्रेरित नेतृत्व – मातृभूमि की सेवा में, पितृभूमि, पवित्र भूमि और वह पवित्र भूमि जिसनें पूरे इतिहास में लोगों को उत्साहित किया है। कोई भी उसमें स्वार्थहीन कार्यों की उंचाई देख सकता है। कुछ वर्षों पहले मैं ल्हासा, तिब्बत, में था। वहां रहनें वालों के लिये वह पवित्र भूमि थी, यहां तक कि भूमि के प्रति उनका कर्मकाण्डीय व्यवहार था। कोई देख सकता है कि लोग प्रत्येक प्रातः झोखंग मंदिर के आस पास कोरा (परिक्रमा) करते हैं। अनेक लोगों की परिक्रमा में दण्डवत सम्मिलित होती है। जो लोग इस अभ्यास को करनें में आस्था रखते थे और वर्षों किया था आप उनको बता सकते हैं। दण्डवत में झुक कर मस्तक को भूमि से स्पर्श करवाना होता है। जिन्होंनें लम्बे समय तक यह अभ्यास किया है उनके माथे पर कैलस (बार बार के स्पर्श के कारण बना स्थाई निशान या ढट्ठा) दिखाई पढ़ेगा।

दूसरी ओर हम सभी परिचित हैं भूमि के कारण अलग प्रकार की बुरी और विनाश कारी प्रवृत्तियां उत्पन्न होती है विशेष रूप से पितृभूमि। हमारी हाल ही के इतिहास में इसी के कारण अनेक बार लाखों लोग अनावश्यक मृत्यु और हिंसा के आगोश में आ चुके हैं।

हाल ही में लोगों में इज्राइल में आक्रमण के कुछ सप्ताहों बाद गाजा को अपने नियंत्रण में लेना प्रारम्भ कर दिया था। मेरी पत्नी और मैं थिऑसफिकल अधिवेशन के लिये उस समय मिश्र में थे। मिश्र जानें का यह मेरा पहला अवसर नहीं था। क्यों कि मेरा परिवार मात्र 2 वर्ष पुराना है, मैं उस स्थान पर ठहरा था जहां मेरा परिवार मेरे पिता श्री के साथ रहता था क्योंकि मेंरे पिता नें काहिरा (कैरो) में 'केयर' नाम की अमेरिकन सेवा संस्था के मुख्य के पद को ग्रहण किया हुआ है। यह फिलिस्तीन के युद्ध के बाद के परिणाम थे, जैसा कि इजरायल में कहा जाता है, मुक्ति का युद्ध। उस युद्ध का परिणाम यह हुआ था कि सैकड़ों

हजार फिलिस्तीनी स्थानान्तरित हो गये थे, जिनमें से अनेक मिश्र आ गये थे और आवास और भोजन की समस्या खड़ी हो गयी थी। मेरे पिता वहां आवास समस्या के बारे में सहायता कार्य कर रहे थे। यह लगभग 70 वर्ष पहले की बात थी और अब हम 2024 में हैं जिसमें इतिहास अपने को दोहरा रहा है। वह प्रश्न जो हमें अपने से पूछना चाहिये न केवल इतना कि हमें क्या शिक्षा लेना चाहिये किन्तु यह कि स्थान की कितनी शक्ति है कि जो हमें इतनी ऊर्जा के साथ प्रभावित करती है। प्रत्येक हाई स्कूल के विद्यार्थी को उस स्पीच के बारे में पढ़ाया जाता है जिसके बारे में अनेक लोग कहते हैं कि यह अंग्रेजी भाषा का सबसे महान वक्तव्य था जो अब्राहम लिंकन नें गृह युद्ध के समय दिया था जो दक्षिण और उत्तर के बीच हो रहा था, जो अंतिम रूप से गुलामी प्रथा पर केंद्रित था। मुझे पूरा वक्तव्य तो याद नहीं है, पर जो मुझे याद है वह मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूं – ''सत्तासी वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने इस महाद्वीप में एक नया राष्ट्र लाया और स्वतंत्रता का स्वप्न देखा और इस प्रस्ताव को समर्पण किया कि सभी मनुष्यों की रचना एक ही प्रकार से हुयी है।'' यह मेरी स्मृति में अंकित हुआ है। यह वक्तव्य एक कब्रिस्तान, सोल्जर्स नेशनल सिमेट्री समर्पित करनें के लिये था। यह पूरे अमेरिका में विस्तार करते हुये युद्ध में मारे गये युवाओं की स्मृति में था। ये भावनायें मात्र राष्ट्रभक्ति और भक्तिभाव की नहीं हैं, किन्तु साथ साथ अलगत्व, अलगाव वाद प्रजाति भेद, साम्राज्यवाद की हमारी प्रश्नहीन प्रतिक्रिया है, जिसे भूमि हमारे समक्ष उत्पन्न करती है।

एक अभिव्यक्ति है कि आनें वाली घटनायें आनें के पहले अपनी छायायें प्रक्षेपित करती हैं। पिछले कुछ दिनों से मेरा अनुभव रहा है कि मैं जहां भी जाता हूं, लोगों में एक भाव जागृत होता है कि कुछ अच्छा होनें वाला है, कि हम किसी की नोक पर हैं, जो अभी अनावरित चुनौतीपूर्ण क्षण है। यह सम्भावित महानता की प्रकृति वास्तव में व्यक्ति के परिवेश पर निर्भर करेगी। किसी व्यक्ति को जिसका वास्तविकता का आभास युद्ध, हिंसा, महामारी, क्लाइमेट परिवर्तन, साइबर आक्रमण आदि के प्रतिदिन के समाचारों से प्राप्त होता है, यह महान कुछ जो आ रहा है भय का कारण हो सकता है। एक दूसरा आयाम भी है। स्पष्ट रूप से कुछ सम्भावित भविष्य है जो चुनौतीपूर्ण है, किन्तु कुछ इसे भय के रूप में देखते हैं और कुछ इसे आवश्यकता, एक अवसर मानते हैं। सदा कुछ ऐसे लोग रहेंगें जो जानते हुये या अज्ञानता में मानवता के इतिहास के वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार होनें वाली घटनाओं का सामना करनें और प्रतिक्रिया

करनें के लिये तैयार कर लिया है।

टी.एस. की स्थापना 1885 में हुयी थी, गृह युद्ध समाप्त होनें के 10 वर्ष बाद। जिसे कह सकते हैं, दासता की प्रथा और मनुष्यों की विक्री और खरीद को वैधानिक सहारा देने वाला कानून तब लागू नहीं था। टीएस इस दृष्टि के साथ आयी थी कि यह संसार कुछ ऐसा हो सकता है जैसा इसे होना चाहिये। यह वह संगठन था जो विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना चाहता था जो बिना किसी भेद के हो कि व्यक्ति की जाति, धर्म, प्रजाति, लिंग या रंग क्या है, अनेक वस्तुयें जिन्हें हमनें बनाया है, वे एक दूसरे के लिये बाधायें हैं।

महात्माओं के सबसे महत्वपूर्ण पत्र, ''महाचोहान के पत्र'' में थिऑसफिकल सोसाइटी की स्थापना और इसके सम्भावित मूल्य के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें कही गयी हैं। पत्र में सावधान रहनें के लिये कहा गया है कि मानव परिवार में एक महत्वपूर्ण बंटवारा होनें वाला है, जो प्रदर्शित करता है कि मावतता दो अलग अलग ध्रुवों या विचारों की ओर बंट रही है। एक समूह जिसे ''पाशविक भौतिकता'' के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है जो उस समय के विज्ञान के संसारिक दृष्टि कोण से प्रभावित है, जो भौतिकता और अधोगति पर आधारित है। दूसरा जिसे 'डिग्रेडिंग अंधविश्वास' कहा जाता है। इन्हीं दोनो ध्रुवों के बीच मानवता दो शिविरों में विभाजित थी। पत्र यह जोर देता है कि टी.एस. का निर्माण वास्तव में एक तीसरा रास्ता निकालेगा जो उन कट्टरवादी विशेषताओं से मुक्त हो जो दोनों में ही विद्यमान हैं। यह विचार कि सनातन धर्म के साथ नवीनीकृत सम्बन्ध और टीएस मानव की आवश्कतायें हैं जिसके कारण यह अस्तित्व में आयी। टीएस का उद्देश्य जैसा एचपी ब्लैवैत्सकी नें उन्होंनें 'की टू थिऑसफी' में जो उनकी अंतिम पुस्तकों में से एक है, बताया है कि इसका उद्देश्य संसार को यह बताना है कि थिऑसफी जैसी कोई वस्तु अस्तित्व में है। जब मैंनें पहली बार इस कथन को देखा तो यह मेरे लिये जिज्ञासा पूर्ण था और कुछ प्रश्न उठे जिनका उत्तर अपेक्षाकृत शीघ्र नहीं मिला। थिऑसफी में ऐसा क्या है जिसके अस्तित्व के ज्ञान के बाद व्यक्ति और संसार को कोई शक्ति मिल जाती है?

एक वस्तु जिसे अनेक लोग इस प्रज्ञान परम्परा में, जानबूझ कर या अनजानें में खोजते रहते हैं, वह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि 'मैं कौन हूं?' इस प्रश्न का उत्तर देनें का एक प्रकार यह है कि मनुष्य में सर्वोच्च आत्मा और निम्नतम पदार्थ मन के माध्यम ये जुड़े हैं। यह कथन पर्याप्त साधारण है, किन्तु गहराई और सामर्थ्य जो हम में है वे बहुत गहन हैं। आत्मा और पदार्थ मन के माध्यम से जुड़े हैं; स्पष्ट

संकेत करते हैं कि मन वह स्थान है जहां हम अपना कार्य पाते हैं।

सामान्यतया हम मन के निम्न प्रयोग पर फोकस करते हैं। आस पास के संसार के बारे में सोच कर हम इसे अपने हित में व्यवस्थित कर लेते हैं। सामान्य रूप से यही वह विधि है जिससे हम इसे देखते हैं। यद्यपि यह विषम और पूरी तरह शुद्ध अभिव्यक्ति नहीं है, हमारे यहां होनें का एक आयाम यह कार्य होता है ''पदार्थ को आत्मामय'' करना। मन एक संदेशवाहक के रूप में आध्यात्मिक स्तर के प्रभाव भौतिक संसार को देता है। और उसी के बराबर मन के पास निराधार आध्यात्मिक अभिव्यक्तियां लानें की भी क्षमता है। मन का हमारे अस्तित्व के इन दो ध्रुवों के बीच में विकसित होना होता है।

मनुष्य इनमें से सभी है – आत्मा, पदार्थ, मन। एचपीबी कहती हैं कि ये विकास की तीन योजनायें है। जैसे हम मैटीरियल संसार के बारे में और वह भूमि जिसे हम उससे संबद्ध करते हैं के बारे में बातें करते हैं तो हम दूसरी भूमि पर भी रहते हैं। अपने 'मानवीय' गुणों के कारण हम 'आत्मा, पदार्थ और माइंड की भूमियों में रहते हैं।

जिस प्रकार एचपीबी इन तीन विकास की योजनाओं को वर्णित करती हैं, ये जटिलता से प्रत्येक बिदु पर एक दूसरे से मिश्रित हैं। यह हमारा सामान्य दृष्टिकोण नहीं है। हम पर्तो में विचार करने का प्रयास करते हैं, आत्मा को सबसे ऊपर और पदार्थ को सबसे नीचे और बीच में मन को रखते हुये। जैसे पानी में रंग और स्वाद की भांति, हम लोग एक साथ भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्राणी होते हैं। इस सत्य को भूल जानें के कारण हमारे पदार्थ के आध्यात्मीकरण के प्रभाव सीमित हो जाता है। यह शक्ति का कुछ है जो सनातन प्रज्ञान के अस्तित्व के बारे में हमारे ज्ञान को जागृत कर सकता है। अतः उनकी क्या भूमिका हो सकती है, जिन्होंनें कुछ मूल्य और इस दिशा में कुछ अनुभव भी प्राप्त कर लिये हैं। यह बिल्कुल सत्य है कि हमारे अस्तित्व के इस तीन परत की प्रकृति का ज्ञान में कुछ शक्ति है जो आकर्षक है, अनेक प्रकार से चुम्बकीय है। जिस सीमा तक हम इसके निकट पहुंच जाते हैं यह हमें प्रभावित करती है। मैं प्रायः लोहे की एक ठंढी छड़ से इसका उदाहरण देता हूं जिसे यदि आग के पास रखा जाये तो आग से दूरी के अनुसार वह कम या अधिक गर्म हो जाती है। जितनी अधिक देर तक वह आग के निकट रहती है उतनी ही अधिक वह प्रभावित होती है।

अडयार में जो प्रयास किये जाते हैं उसका एक भाग है जो मन, आत्मा और सम्बन्धित भूमि में समाहित किया जाता है। यह स्थान महान विभूतियों की उपस्थिति से गर्भित है। जहां कही भी विचरण करो भूमि स्वयं तुम्हारे अंतर में सांस लेती है, किन्तु सांस को केवल अंदर लेना सम्भव नहीं है, हमे इस उपस्थिति को अपने बनाये हुये संसार में बाहर भी निकालना होता है।

एक विचार है कि प्रत्येक वस्तु जो आज वास्तविक है वह कभी काल्पनिक थी। कुछ भी, हो एक कुर्सी से लेकर कपड़े तक जिसे हम पहनते हैं। टीएस का परिसर जिसमें हम विचरण करते हैं वह पृथ्वी पर लायी गयी कल्पना का परिणाम है। हम इसके चित्र के परिवर्तन में लगे रहे हैं जो हमारा घर है। इसका क्या अर्थ है? इस कल्पना का क्या प्रभाव है?

थिऑसफिकल सोसाइटी के मिशन का कथन है जिसकी लम्बाई 24 शब्दों की है। मैं प्रत्येक को इससे परिचित होनें को प्रोत्साहित करता हूं। इसके पहले तीन शब्द हमारे मिशन की विस्त्रित रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं – ''मानवता की सेवा करना''। प्रश्न उठता है कि, कैसे? हमारी प्रतिक्रिया हो गयी है – किसी भी और प्रत्येक उपलब्ध साधन से।'' उदाहरण के लिये हाल ही में अडयार में कला में पुनर्जागरण हो रहा है। इस स्थान पर प्रारम्भ से जो धनी विरासत मिली है हम लोग उससे पुनः परिचित करानें का प्रयास कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि हम में अचानक कला के प्रति एक रुचि जागृत हो गयी है; वर्षों से हमारे संग्रहालय में हमारे पास महत्वपूर्ण कलाकृतियां और कला के विभिन्न आन्दोलनों जो जो इस स्थान या थिऑसफी से प्रभावित थे के उदाहरण थे। वह अपनें को अधिकाधिक स्पष्ट करता जा रहा है।

क्योंकि हमारे पास साधनों की कमी थी और ये वस्तुयें बाद में भी रख रखाव चाहती हैं। इस रखरखाव की योजना को अन्य अनेक कार्यों की भांति हम कर रहे हैं, जो हमारी आंतरिक क्षमता बढ़ा रही है। हमारे पुनरुद्धार की योजना का पर्यवेक्षण स्ताम्बूल, तुर्की की बहन एलिफ कामिस्ली कर रही हैं। मैंनें ईमेल के माध्यम से पहली बार उनको 2014 में जाना जब वे स्तम्बूल में एक अर्धवार्षिक आर्ट प्रदर्शिनी की देखभाल करती थीं, वे ''थाट फार्म' की एक पेंटिंग चाह रही थीं जो उस समय हमारे पास नहीं थी किन्तु बाद में हमें मिली। उस संबंध के बाद वे इस स्थान (अडयार) के मूल्य और प्रभाव के बारे में और गहराई से परिचित हुयीं। जो अन्य की भांति कार्यों में सहायता से प्रारम्भ हुआ था वह अब टीएस सदस्य हो कर कार्य कर रही हैं।

प्रत्येक वस्तु जिसका कुछ महत्व है जिसे टीएस नें अपने लगभग 150 वर्षों के इतिहास में प्राप्त किया है वह स्वप्नका परिणाम है। निरपवाद रूप से हमारा अनुभव यह रहा है कि आप एक संसार का स्वप्न देखिये, और चारो ओर से साधन, उस स्वप्न को भूमि पर लानें के लिये बढ़ते रहते हैं। और उस स्वप्न में जीनें का रास्ता खोज लेते हैं। हम एक संसार का स्वप्न देखते हैं, और उस स्वप्नसंसार के पात्रों की जनसंख्या को बढ़ाते हैं, भूमि में कुछ नहीं दिखाई पड़ता है और हम स्वप्न देखते हैं, एचपीबी का स्वप्न, मास्टर्स का स्वप्न। संसार के लिये एक सम्भावना है जो किसी प्रकार बन्धुत्व के भाव पर आधारित है, एक स्वप्न जिसनें कुछ उत्कृष्ट मनों को आकर्षित किया है।

अब हम स्वप्न के नये आयाम में हैं – इस स्थान पर एक आश्चर्यजनक जंगल है जो इस काल में जब इनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। हम पार्क की बात नहीं कर रहे हैं, वरन एक चेतना है जो प्राकृतिक संसार की निकटता से टपकती है। यह वह दिशा है जिसकी ओर हम जा रहे हैं।

पिछली रात जॉस ब्रुक्स के वक्तव्य के बाद एक व्यक्ति मेरे पास आया जो ब्रुक्स की भावनाओं और उनके पारिस्थितिकी के ज्ञान से अत्यंत प्रभावित था, जिसनें मुझे समझानें का प्रयास किया कि हम इस वक्तव्य को केवल एक अच्छा वक्तव्य और सुन्दर परिकल्पना कह कर ही न रह जायें। मुझे उसको रोक कर कहना पड़ा कि जॉस ब्रुक्स यहां था क्यों कि अनेक महीनों से हम एक अन्य राह और संसार का स्वप्न देख रहे हैं, बिना उनको जानें या उनके कार्य का विस्तार जानें, इस स्वप्न नें रूप ले लिया है और हमें साथ खड़ा कर दिया है। यह परिसर एक रत्न बनने वाला है, जानवरों और वन्य प्राणियों के लिये एक शरण स्थल, लोगों के लिये एक शैक्षिक साधन, उनके लिये जो एक सैटालाइट में रहते हैं जो दिन प्रति दिन जल रहा है, एक शिक्षा जो अन्य दिशा की ओर संकेत करे, और इसका प्रत्येक टुकड़ा एकत्व के भाव से सम्बन्धित हो, वह सब कुछ जो गहराते हुये प्रज्ञान की पहुंच की जागरूकता हो।

महात्मा गांधी की आत्मकथा का एक उत्कृष्ट शीर्षक है, ''सत्य के मेरे प्रयोग''। यह टीएस अडयार परिसर एक प्रयोग है, इसका परीक्षण नहीं किया गया है, कहीं अस्तित्व में नहीं है, और किसी नें भविष्यवाणी की थी कि यह शराब में टूट फूट कर मर जायेगा। यह वास्तव में एक प्रयोग है जिसे यह उदाहरण प्रस्तुत करनें के लिये कि एकत्व की जागरूकता की जिसमें पर्यावरण के प्रत्येक स्तर को प्रभावित करनें की सम्भावना है। इसके तुरंत परिणाम क्या होंगे यह

अनिश्चित है। क्या हम संसार को साधनों और लोगों को अविवेकपूर्ण दुरुपयोग से वापस लानें में सहायता करें? निकट भविष्य में परिणाम अनिश्चित हैं। मेरा व्यक्तिगत विचार है कि मुझे बहुत विश्रांति मिलेगी यदि मैं यह प्रतीत करूं कि मानवीय स्वभाव नें अपनें पर नियंत्रण कर लिया है और इस ग्रह पर विनाशकारी प्रभाव वाले कार्यों पर रोक लगा दे। लम्बे समय में कुछ बाते हैं जो निश्चित हैं। यह तो निश्चित है कि कोई प्रयास बेकार नहीं होता है; यह प्रकृति के अर्थशास्त्र में नहीं है कि कोई कार्य खो जाये। यह दृढ़ता से कहा जा सकता है कि महान अस्तित्व हैं – प्रज्ञान के मास्टर्स – जिनका ध्यान और प्रभाव सारे प्रयासों को जो उनके उद्देश्य की दिशा में होते हैं, की सहायता करते हैं और उसे सहारा देते हैं। यह निश्चित है कि यदि हम में से प्रत्येक परिवर्तन में उपकरण के रूप में कार्य करे तो स्वप्न भूमि पर आयेगा। ये वे वस्तुयें हैं जिसके ऊपर हमारा कुछ नियंत्रण है। ये वे वस्तुयें हैं जिन पर हमें अपने प्रयास समर्पित करनें का प्रयास करना चाहिये।

हमारी प्रक्रिया है कि हम जागरूकता के लिये ज्ञान के परे जायें, उस जागरूकता को हम जहां भी हों वहां ऊपर उठानें के लिये चैतन्यता से प्रयोग में लायें। वास्तव में किसी सीमा तक थिऑसफी के द्वारा संकेत की गयी शक्ति में गहराई है तो हम जिस वस्तु को स्पर्श करें उससे वह अभिव्यक्त होनी चाहिये। यह हमारा दायित्व है और आगे का कार्य है।

(सौजन्य से – द थिऑसफिस्ट फरवरी 2024)

यू.एस. पाण्डेय

पाइथागोरस – उनका जीवन और दर्शन

भूमिका

एच.पी.ब्लैवैत्सकी, थिऑसफी की मुख्य संस्थापक और अनेक अन्य थिऑसफिकल लेखकों, के लेखन में पाइथागोरस को प्रायः उद्धरित किया जाता है। वे साक्रेटीज के पहले के ग्रीक दार्शनिक थे। उनका जीवन काल था 582 से 507 वर्ष ई0पू0 था।

ग्रीक इतिहासकार उन्हें पहले सैद्धांतिक भौतिक वैज्ञानिक मानते थे क्योंकि वे गणित के प्रयोग से प्राकृतिक संसार के अध्ययन पर विशेष जोर देते थे। पाइथागोरस के लिये गणित के परीक्षण और धार्मिक अध्ययन एक दूसरे के सम्पूरक थे, आपस में एक दूसरे से अलग नहीं थे, और वे अपने शिष्यों को कर्मकांडों और सनातन रहस्य धर्मों के दीक्षक के रूप में, गणित और धर्म, दोनों को अपनी प्रीस्टली भूमिका से अलग नहीं कर सकते थे।

उनके लिये धर्म और विज्ञान एक ही लौकिक सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंनें शिक्षा दी है कि संख्याओं की समस्याओं का अध्ययन और तब ध्यान करना कि किस प्रकार वे प्राकृतिक संसार में अभिव्यक्त होते हैं, केवल उसकी कार्यविधि जान लेनें की अपेक्षा कोई व्यक्ति बहुत अधिक प्राप्त कर सकता है – जो विज्ञान का एक ही उद्देश्य है।

पाइथागोरिज्म श्रद्धालु विद्यार्थियों को यह शिक्षा देते है कि पूर्ण के बारे में जागरूकता और होलिस्टिक सिद्धांत जो प्राकृतिक संसार की अनेक अभिव्यक्तियों को नियंत्रित करते हैं को प्राप्त करनें के लिये सदा विवरणों की अपूर्ण समझ से आगे जा कर – जो विज्ञान का कार्य है – ईश्वर का संकेत कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

सी. डब्ल्यू. लेडबीटर नें अपनी पुस्तकें 'द मास्टर्स ऐन्ड पाथ' और 'द लाइव्स ऑफ एल्कियानी' में लिखते हैं कि पाइथागोरस महात्मा के.एच. के पहले के जन्म थे, जो एच.पी. ब्लैवैत्सकी के शिक्षकों में से एक थे।

प्रारम्भिक जीवन, अध्ययन और दीक्षा

पाइथागोरस का जीवन चरित्र लिखनें वाले एक लेखक इआंब्लिकस ने लिखा है कि उनका जन्म फिनीसिया के सिडॉन में हुआ था। एक दूसरे जीवन चरित्र जिसे पार्फिरी नें लिखा है, के अनुसार उनका जन्म सैमॉस में हुआ था।

अनेक लेखकों, जिन्होंने उनके जीवनचरित्र लिखें हैं, जैसे इआंब्लिकस, पार्फिरी, लैरीसस जो पाइथागोरस के लगभग 800 वर्ष बाद हुये थे के विवरणों में मतभेद और असंगतियां है।

पाइथागोरस, फिनीसिया निवासी म्नेसार्कस जो एक मणियों को नक्कासीकार थे, और उनकी पत्नी पाइथेनियस के तीन पुत्रों में से एक थे। एच.पी. ब्लैवैत्सकी की थिऑसफिकल गलॉसरी में बताया गया है कि उनके पिता एक कुलीन और ज्ञानी व्यक्ति थे। (पृ0 266)

पाइथागोरस एक बालप्रौढ़, दयालु और मेधावी युवा थे और उनकी प्रसिद्धि आसपास के नगरों में थी। लोगों में उनके बारे में इतना अच्छा दृष्टिकोण था कि यह कहानी चल पड़ी कि वे ग्रीक देवता अपोलो के पुत्र थे।

पाइथागोरस फिनीसियन भाषा बोलते थे। उनके पिता टायर के मूल निवासी थे जो फिनीसिया का एक दूसरा नगर है। फिनीसिया के तटीय नगर बाइब्लॉस और टायर में दीक्षा पानें के बाद वे माउंट कार्मेल के पास एक मंदिर में एक साधु के रूप में रहनें लगे।

उनके शिक्षक थेल्स नें अपने बहुत बूढ़े होने के कारण उनको सलाह दी कि मिश्र जाकर मेम्फिस और जियस संतों के पास अध्ययन करें जहां के बारे में वे निश्चित जानते थे कि वहां सर्वाधिक ज्ञानी और दिव्य लोग थे। वे मिश्र गये और वहां सन्त डायोस्पॉलिस नें उन्हें प्रवेश दे दिया। उन्होंने अगले 22 वर्ष मंदिरों का भ्रमण करते हुये, और वहां के रहस्यों और कर्मकांडों के बारे में और मिश्री भाषा और वहां के संतों की चित्रलेखों की भाषा को सीखते हुये गुजारे। उन्होंने वहां की परम्परायें और निषेधों को भी सीखा। उन में से कुछ थे बीन्स को खानें पर निषेध क्यों की वह गर्भ स्थित शिशु के आकार के दिखते हैं। पाइथागोरस नें अपनी शिक्षाओं में पशुओं के मांस खानें पर भी निषेध लगाया क्योंकि वह भावनाओ को प्रदूषित करता है। उनके शिष्य केवल लाइनेन के कपड़े पहनते थे क्योंकि ऊन और पशुओं की खाल पर भी निषेध था क्योंकि वे भी भावनाओं को प्रदूषित करते हैं। पाइथागोरस को कैम्बिसेस के सिपाहियों के द्वारा पकड़ लिया गया था, जो पर्सिया के राजा के पुत्र थे, जिसनें 525 ई0पू0 में मिश्र पर आक्रमण किया था और वहां के राजा बन गये थे। पाइथगोरस को बैबीलॉन में ले जाया गया जहां मैगी नें उन्हें पवित्र कर्मकांडों की शिक्षा दी और उन्हें अंकगणित और संगीत सिखाया। उन्होंनें चैल्डियन प्रज्ञान का सीधा ज्ञान प्राप्त किया। यह ''बुक ऑफ नम्बर्स'' के

नाम से प्रसिद्ध है, जिसका संकेत है कि यह यहूदियों के रहस्यों का साहित्यिक स्रोत है, जिसे कबाला कहते हैं। पाइथागोरस नें मोसा के बाद के मसीहों के साथ पढ़ा और इसलिये कबाला के गूढ़ सिद्धांतों को पूरी तरह से जाना और प्राचीन यहूदियों के रहस्यों का जाना जिसे कबाला कहते हैं – एक बहुत महत्वपूर्ण सत्य जिसके कारण कबाला और 'पाइथागोरियन नम्बर मिस्टीसिज्म' एक दूसरे से सम्बन्धित हो गये। एचपीबी यह भी कहती हैं कि पाइथागोरस ने भारत की यात्रा की जहां पर उन्होंने ब्राह्मणों का एसोटेरिक विज्ञान भी सीखा। एचपीबी के अनुसार पवित्र संख्या दस के बारे में उनकी शिक्षाओं का स्रोत हिन्दू पराभौतिक विज्ञान ही है। उन्होंने बुद्धिस्ट दर्शन का भी अध्ययन किया जो उनकी शिक्षाओं का आधार बना। वे भारत में अब भी 'यवनाचार्य' (ग्रीक शिक्षक) के नाम से याद किये जाते हैं।

ई. पोकॉक पाइथागोरस नाम बुद्ध और गुरु से व्युत्पन्न हुआ बताते हैं, एक आध्यात्मिक शिक्षक हिगिन्स इन्हें केल्टिक बताते हैं जिसका अर्थ है सितारों को देखने वाला। फिर भी, यदि हम 'पाइथो' को 'पेटा' से निकालते हैं, जिससे नाम संकेत करेगा 'आकाशवाणी का व्याख्याकार' और बुद्ध–गुरु बुद्ध के सिद्धांतों का शिक्षक (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 2, पृ0 491 एफएन)

पाइथागोरस – पितर–गुरु, पिता और शिक्षक जैसा कि उन्हें प्राचीन हिन्दू मानते थे – क्रोटोना आये और उन्होंनें एक लम्बे समय की घोषणा की जिसे अब फिर से भविष्य में उतने ही लम्बे समय के लिये माना जा रहा है। उन्होंनें अपने शिष्यों को अपने पिता और माता की प्रतिष्ठा करनें और पवित्र पिता और मानवता, ''अर्हतों के पूर्वज'' के प्रति पवित्र वचन देनें की शिक्षा दी।'' (द थिऑसफिस्ट, ऐप्रिल, 2023 – आर्टिकल – गोस्पेल एकॉर्डिंग टू सेंट जॉन लेखक राघवन नायर पृ0 12)

ऐसा लगता है कि पाइथागोरस नें पूरे संसार की यात्रा की थी, और अपनें दर्शन को अनेक प्रक्रमों से चुना था। पाइथागोरस नें ही 'फिलॉसफर' शब्द बनाया था, जो दो शब्दों से बना है जिसका अर्थ होता है ''प्रज्ञान का प्रेमी'' – फिलो–सोफास। वे ऐतिहासिक प्राचीन काल के एक महानतम गणितज्ञ के रूप में, जियोमीटर और आस्ट्रोनॉमर थे, और सर्वोच्च परा भौतिक वैज्ञानिक और विद्वान थे। पाइथागोरस नें अविनाशी प्रसिद्धि पर विजय पायी है।

पाइथागोरस नें अपने गूढ़ सिद्धांत स्वयं प्राप्त किये थे, पहले मोकस के

अनुयायियों से और बाद में भारत के ब्राह्मणों से। वे गूढ़ विद्याओं में थेल्स, पर्सियन और चैल्डियन मैगी के आचार्यों द्वारा भी दीक्षित हुये थे। (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 2, पृ0 338)

एचपीबी का कथन है कि पाइथागोरस 'मिस्ट्री स्कूल' के द्वारा भी दीक्षित थे (जैसे प्लैटो और अनेक अन्य ग्रीक दार्शनिक) जिन्होंने उनके विचारों को मिश्र और अंततः हिन्दुओं से सम्बन्धित किया है (सीक्रेट डाक्ट्रीन खण्ड 1 पृ0 361)। पार्फायरी, पाइथागोरस के बारे में लिखते हुये बताते हैं कि उनका शुद्धीकरण और दीक्षा बैबीलॉन में जार अदास के द्वारा हुयी थी जो पवित्र कॉलेज के मुख्य थे। (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 2 पृ0 361)।

स्कूल, सहपाठी और शिक्षण की विधियां

बैबीलॉन में मुक्त किये जाने के बाद वे अपने द्वीप के घर में वापस आ गये। उन्होंनें एक गुफा को जो सैमोस नगर में स्थित थी को अपना घर और विद्याालय बना लिया था। जहां वे अपना अधिकांश समय ध्यान और शिक्षण में लगाते थे। बाद में उन्होंनें उसको छोड़ दिया और मांगना ग्रीसिया (दक्षिणी इटली) में क्रोटोना चले गये। जहां उन्होंनें एक विद्यालय स्थापित किया जिसनें बहुत शीघ्र सभी सभ्य केंद्रों के सर्वोत्तम मेधावी चुन लिये। इस विद्यालय में वे शिष्यों के समूह को एसोटेरिक सिद्धांतों की शिक्षा देते थे। वे उनकी अर्धदेव की भांति प्रतिष्ठा करते थे। यहां उन्होंनें 600 शिक्षार्थियों को एकत्रित कर लिया जो गणित, ज्योतिष, नैतिकता और संगीत पढ़ते थे। यह धार्मिक अकादमिक से अधिक एक धार्मिक बन्धुत्व था। इस विद्याालय के ढांचे के अनेक विवरण जो इस प्रकार हैं –

1. अनुयायियों को विद्यालय में प्रवेश के 6 वर्षों तक मौन के अनुशासन का पालन करना पड़ता था। इस काल में वे एकाउस्टकोई या 'श्रावक' कहलाते थे। वे महिलाओं को पुरुषों के बराबर मानेंगे और दासों के साथ मानवीयता से व्यवहार करेंगे, और पशुओं को प्रतिष्ठा से देखेंगे। इससे स्पष्ट है यह कोई केवल तर्कबुद्धीय दर्शन नहीं था, किन्तु एक आध्यात्मिक अभ्यास था। और उनके अनुयायियों के लिये दर्शन का अर्थ था प्रज्ञान की खोज, केवल सूचनायें एकत्रित करना ही नहीं। (थिऑसफिकल एन्साइक्लोपीडिया पृ0 522)

   कोई ट्यूशन शुल्क नहीं होता था। सदस्यता पुरुषों और महिलाओं के

लिये बराबर उपलब्ध थी और पूरी तरह से मेरिट पर निर्भर होती थी। उनके अनुयायियों को ब्रह्मचर्य, मौन, शाकाहार का पालन करना होता था जब कि उनको अपनी वस्तुओं को कामन सम्पत्ति मानना होता था, जहां से 'जेनोबाइट' शब्द विकसित हुआ जिसका अर्थ है सम्मिलित जीवन।

2. शिष्यों के दो समूह थे। (1) विद्यार्थी (गणित) जो कारण और पाइथागोरस की शिक्षाओं के सैद्धांतिक आधार और ज्येमेट्री, अंकगणित और संगीत पढ़ते थे। और (2) दूसरे कम एडवांस्ड समूह श्रावकों का होता था जो केवल सार रूप में निर्देश प्राप्त करते थे। उनके समक्ष पाइथागोरस नहीं आते थे वे केवल उनकी आवाज सुनते थे। उनके साथ कोई विस्त्रित व्याख्या या तर्क नहीं किये जाते थे। वे जो उनके साथ व्यक्तिगत रूप से साथ रहते थे उन्हें पाइथागोरियन्स कहते थे और केवल उनकी शिक्षाओं का पालन करते थे वे पाइथागोरिस्टीसियन्स कहलाते थे।

   पाइथागोरस गोपनीयता से उनके स्वभाव, वाणी और कार्यविधियों की जांच करते रहते थे ताकि वे जान सकें कि वे क्या और कितना सीख सकेंगे। एक मैथमेटिको को 5 वर्ष तक मौन धारण करना पड़ता था, जिस काल में उनकी प्रापर्टीज ट्रस्टीज को समर्पित कर दी जाती थी। यदि इस काल में उसको पाइथागोरस की अनुमति मिल जाती थी तो उसे ट्रस्टी बना लिया जाता था और वह ट्रस्टेड एसॉट्रिको हो जाता था। अव जब पाइथागोरस वक्तव्य देते थे तब सुन और देख भी सकता था। (इसके पहले वह केवल पाइथागोरस को सुन सकता था) यदि रिजेक्ट होता था तो वह जितनी सम्पत्ति स्कूल में लाया था उसका दो गुना वापस कर दिया जाता था और तब से उसके साथ साथी विद्यार्थियों के द्वारा एक अपरिचित जैसा व्यवहार किया जाता था। पाइथागोरस अन्य विद्यार्थियों को बता देते थे उन्होंनें उसमें क्या देखा क्यों कि वे समझनें के योग्य होते थे। (पाइथागोरस' लाइफ ऐन्ड फिलॉसफी लेखक स्टीफेन फिलिप्स)

3. ऐनी बेसैन्ट नें अपनी पुस्तक 'एसॉटेरिक क्रिस्चियनिटी' में, जी.आर. एस. मीड की *ऑर्फियस* को उद्धरित करते हुये लिखती हैं, ''पुरातन काल के लेखक मानते थे कि अनुशासन उच्च्तम उदाहरण उत्पन्न

करनें में सफल हुआ है, न केवल शुद्धतम चरित्र और भावनायें किन्तु कार्यविधियों की सरलता, डेलीकेसी और गम्भीर प्रयास के लिये स्वाद जिसकी कोई समानता नहीं है। स्कूल में बाहरी शिष्य थे जो परिवार और सामाजिक जीवन बिताते थे, और उपर्युक्त उद्धरण इसकी चर्चा करता है। आन्तरिक स्कूल में 3 डिग्रियां थीं। पहले श्रोता थे जो 2 वर्ष मौन रहते थे, जो शिक्षाओं का पालन करनें के लिये सर्वोत्तम उपाय करते थे। दूसरी डिग्री मैथमैथीसी की थी जिसमें ज्योमेट्री और संगीत, संख्याओं, रूप, रंग, और ध्वनि की थी। चौथी डिग्री फिजीसी, जो कॉस्मोगॉनी और मेटाफिजिक्स में पारंगता होती थी। यह सच्चे रहस्यों को ले जाता था। विद्याालय में प्रवेश के लिये उसकी साख बिना किसी आरोप के और सन्तोषी प्रवृत्ति की होनी चाहिये। (एसॉटेरिक क्रिस्चियनिटी, पृ0 22–23)

कुछ व्यक्ति जिन्हें पाइथागोरस के विद्यालय में प्रवेश नहीं मिल पाया था वे विद्यालय के शत्रु हो गये थे और विद्यालय में आग लगा दी थी, जिसमें पाइथागोरस के अनेक अनुयायी जल गये थे। उस समय वे स्वयम् बाहर थे और कभी लौट कर नहीं आये। विद्यालय 6 ई0पू0 में प्रशासनिक अधिकारियों के द्वारा धर्मदंड के कारण बंद कर दिया गया था।

पाइथागोरियन केन्द्र ग्रीक मेन लैंड में पाइथागोरस के जीवन काल में ही स्थापित हो गये थे। पाइथागोरस के विचार एथेंस पहुंच गये थे और प्लैटोनिज्म में मिश्रित हो गये थे।

पाइथागोरियन्स का रहस्यवाद निष्ठावान लोगों के माध्यम से उस पीढ़ी में जीवित रहा और प्लैटो के कॉस्मॉलॉजिकल सिद्धांतों को रूप देनें में मुख्य प्रभाव बना। पाइथागोरस के लेखन में अरिस्टॉटल भी रुचि लेते थे (यद्यपि कम स्तर तक)।

पाइथागोरस की शक्तियां या सिद्धियां

पाइथागोरस के अनुयाई उन्हें यदि देवता नहीं तो अर्ध–दिव्य व्यक्ति मानते थे, पराप्राकृतिक शक्तियों वाले एक सुपर मैन। उन्हें अपने पिछले जीवनों की याद थी। वे पुनर्जन्म के सिद्धांत की शिक्षा देते थे। वे अपनें कुछ शिष्यों के पिछले जन्मों का विवरण भी देते थे। उनके साथ

अनेक चमत्कारों को जोड़ा जाता है। एक दिन उनको इटली के मेटापोटान्टन और सिसिली के टारोमेनिन में देखा गया था, जहां वे दोनो जगह के शिष्यों के साथ बातचीत कर रहे थे। ये दोनों नगर एक दूसरे से भूमि और समुद्र से अलग हैं जिनके बीच यात्रा करनें में अनेक दिन लगते हैं। अरिस्टॉटल नें इस कहानी को पाइथागोरस के बारे में एक प्रबंध में लिखा है।

कहा जाता है कि पाइथागोरस भूचाल के बारे में भविष्यवाणी कर देते थे। कहते हैं उनमें जंगली जानवरों को नियंत्रित करनें की शक्ति भी थी। उन्होंनें समुद्र और नदियों की लहरों को भी रोक दिया था और अपनी अतीन्द्रिय शक्तियों से जान लिया था कि जो राजदूत आया था उसनें उनके एक अनुयायी को मार डाला था।

इयांब्लिकस जिसनें अपनी 'लाइफ ऑफ पाइथागोरस' में उनका जीवनवृत्त लिखा है जिसमें उन्होंनें कहा है कि सेमियन दार्शनिक के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने एक मादा भालू को मनुष्य का मांस न खानें के लिये प्रभावित कर लिया था; एक बाज पक्षी को बादलों से आकर उनके वश आनें को बाध्य किया था। और उसकी पीठ थपथपा कर उसे अपने वश में कर लिया था और उससे बातें करते थे। एक अन्य अवसर पर उन्होंने बैल के कान में कुछ कह कर उसे फलियां न खानें के लिये मना लिया था।, (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 1, पृ0 283)

पाइथागोरस, महान शिक्षक जो अपनें प्रतिज्ञाबद्ध शिष्यों को 'उन वस्तुओं का ज्ञान देते थे जो हैं', के बारे में कहा जाता है कि उनको संगीत का ऐसा ज्ञान था कि वे इसका प्रयोग करके मनुष्य की सर्वाधिक जंगली भावनाओं को नियंत्रित कर लेते थे और उनके मन को प्रकाशित कर देते थें। इसके बारे में इयांब्लिकस नें 'लाइफ आफ पाइथागोरस' में जिक्र किया है। (एसॉटेरिक क्रिस्चियनिटी, पृ0 20–21)

थॉमस टेलर जिसनें इयांब्लिकस की 'लाइफ ऑफ पाइथागोरस' का अनुवाद किया है, नें संकेत किया है ''क्योंकि पाइथागोरस बैबीलस, टायर और फिनीसिया के सारे रहस्यों के बारे में दीक्षित थे 22 वर्ष अदिता के मंदिर में मिश्र में रहे थे, बैबीलॉन में मैगियन्स के बारे में सम्बन्धित रहे हैं, और उनके द्वारा उनके पवित्र ज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त

कर चुके थे, यह बिल्कुल आश्चर्य जनक नहीं है कि वे सारे जादू और चमत्कारों में निपुण थे, इसी लिये वे ऐसे कार्य करनें में सक्षम थे जो केवल मानवीय शक्तियों के द्वारा सम्भव था, इसीलिये वे अशिष्ट लोगों को असम्भव लगती थीं।'' (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 1 पृ0 284)

फिलॉसफी और शिक्षायें

अब हम पाइथागोरस की दार्शनिक शिक्षाओं के कुछ मुख्य बिन्दुओं पर विचार करते हैं –

सूर्यकेन्द्रिता या हेलिओसेन्ट्रीसिटी

पाइथागोरस पहले व्यक्ति थे जिसनें सूर्यकेन्द्रिता की शिक्षा दी थी। उन्होंनें बताया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य का चारो ओर चक्कर लगाती है। (यह विश्वास प्राचीन मिश्र के लोगों का था किन्तु अरिस्टॉटल नें इसका खण्डन किया था)। वे पृथ्वी की धुरी के झुकाव के बारे में भी जानते थे और दिन और रात के कालों को वही नियंत्रित करता था।

उदाहरण के लिये वेदों में 2000 बीसी जैसे पूर्वकाल से इस सत्य के धनात्मक साक्ष्य हैं। हिन्दू ऋषियों और विद्वानों को हमारे गोले के घूमनें और इसकी सूर्यकेन्द्रिता प्रक्रम के बारे में जानते रहे होंगे। इसलिये, पाइथागोरस और प्लैटो इस खगोलीय सत्य को भली भांति जानते थे। पाइथागोरस नें इस ज्ञान को भारत में प्राप्त किया होगा या उन लोगों से जाना होगा जो भारत हो कर आये होंगे, और प्लैटो नें उनकी शिक्षाओं को प्रतिध्वनित किया था। (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 1 पृ0 9–10)

पुनर्जन्म और मेटमसाइकोसिस

वे रिइन्कार्नेशन और अन्य गूढ़ प्रज्ञान उस प्रकार बताते थे जैसा भारत में सिखाया जाता है। मेटमसाइकोसिस या पुनर्जन्म उनके मुख्य सिद्धांतों में से एक था और वे अपनें शिष्यों को मांस न खानें और नैतिक आचरण की दृढ़ आदत डालनें की शिक्षा देते हैं जो अधिक आध्यात्मिक स्तर और अंततः जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्ति दायक है। यदि पाइथागोरस का पुनर्जन्म का सिद्धांत ठीक से पढ़ा जाय और उसे आधुनिक विकासवाद से तुलना की जाये तो विकास वाद के जितने भी

रिक्त स्थान और अनुत्तरित प्रश्न हैं वह विकास का संपूरक होगा।

संख्या, गणित और समरसता

पाइथागोरस के सिद्धांत संकेत करते हैं कि सारी वस्तुयें स्वयं में संख्यायें हैं। पाइथागोरस के रहस्यों का यह विचार है कि, ब्रह्मांड में ईश्वर की प्रमुखता के आधार का अध्ययन करनें के लिये पाइथागोरस की संख्यायें और ज्यामितीय प्रतीक, ग्रन्थों के शब्दों से कहीं अधिक श्रेष्ठतर प्राकृतिक माध्यम हैं।

पाइथागोरियन विद्याालय का सबसे अधिक विशिष्ट सिद्धांत है कि प्रकृति अपने को संख्याओं में या संख्याओं के अनुपात में अभिव्यक्त करती है। इयूक्लिड की ज्योमेट्री का 47 वां प्रस्ताव (समकोण त्रिभुज में कर्ण की लम्बाई का वर्ग अन्य दो भुजाओं के वर्ग के योग के बराबर होता है) पाइथागोरियन प्रमेय कहते हैं और इसका अन्वेषण निसंन्देह पाइथागोरस या उनके अनुयायियों के द्वारा किया गया था। एक पोस्टल स्टैम्प है – जो इस प्रमेय का व्यवहारिक सरल साक्ष्य है – 90^0 त्रिभुज जिसकी भुजायें – $3^2 + 4^2 = 5^2$ एक मिश्र के त्रिभुज के रूप में सबसे महत्वपूर्ण था। ग्रीक पोस्टेज स्टैम्प 1955 'पाइथागोरस थियरी' संस्था की स्थापना की 2500 वीं वार्षिकी के उपलक्ष में जारी किया गया था। समकोण त्रिभुज के बगल में बने वर्ग संकेत करते हैं कि यह दिव्य संस्था है।

और भी अधिक महत्व का यह है कि उन्होंनें बताया कि जब अब्सल्यूट (ब्रह्म) अभिव्यक्त होता है तब वह ऐसा गणित के माध्यम से वर्णित करनें योग्य विधि से करता है। अंतिम वास्तविकता एक इकाई या मोनॉस होता है। जो संसार को ध्वनि या समरसता से उत्पन्न करती है। सबसे पहले जो उत्पन्न होता है वह डयॉड है, किन्तु दो कोई स्थिर संख्या नहीं है (यह ठोस उत्पन्न नहीं कर सकता है अर्थात कुछ अभिव्यक्त नहीं कर सकता है) इसलिये इसके बाद ट्रायड आया, दूसरे शब्दों में, मनुष्य की सात की प्रकृति है, जो एक गूढ़ शिक्षा है जो आधुनिक थिआसफी में पायी जाती है। डिकैड या 10 का विचार भी पाइथागोरसनिज्म में महत्वपूर्ण है और यह पाइथागोरियन्स मानते हैं, जिन्होंने शून्य को सम्मिलित करते हुये डेसिमेल सिस्टम की शिक्षा थी

(सीक्रेट डाक्ट्रीन खण्ड 1 पृ0 361), इसके बहुत पहले कि अरबी उन तक इसे भारत से यूरोप लाते। किन्तु 12 उनकी सबसे अधिक महत्वपूर्ण संख्या थी इसलिये डोडेकाहेड्रान (12 तलों का रेगुलर सॉलिड) एक परफेक्ट रूप हुआ। एक विचार जो जोडियाक के 12 संकेतचित्र होते हैं और प्राचीन काल के अन्य डोडैक्स (जैसे इजरायल की 12 आदिम जातियां)। ऐसा लगता है कि पाइथागोरियन्स नें यह शिक्षा भी दी थी कि नैतिक गुण भी, जैसे न्याय भी संख्या या अनुपात से अभिव्यक्त होते हैं। सम्भवतः इस विचार नें प्लैटो के न्याय के विचार को भी प्रभावित किया था जिसकी रूपरेखा *रिपब्लिक* में दी गयी है।

पाइथागोरस के पास इसका तर्क था कि वे सीमित का प्रयोग नहीं करते थे, संख्या 2 जिसको वे अनुपयोगी कहते थे, की पूरी तरह उपेक्षा करते थे। संख्या 1 अभिव्यक्त होते समय केवल 3 हो सकती है। अनभिव्यक्त जब सरल दूजा पन, क्रियाहीन और ढका हुआ रहता है। दोहरा मोनॉड (7 वां और 6 ठवां तत्व) अस्तित्व में है क्योंकि इस लॉगॉस के रूप में अभिव्यक्त होना है ''क्वान सी यिन'' पहले ट ट्रायड (7 वां, 6 ठवां और आधा 7 वां) बननें तब ''महान गहराई'' की गोद में अपनें में एक वृत्त को पूर्ण वर्ग से अपनें में आकर्षित करनें को ''वृत्त को वर्ग बनाती हुयी'' – सारे रहस्यों से महान, मित्र – और बाद वाले में (WORD) ऐसे उकेरता है जो कभी न मिटने वाला नाम है – अन्यथा ड्यूअलिटी कभी इस प्रकार भ्रमण नहीं कर सकती, और उसे एक में फिर विलीन हो जाना होगा। 'गहरा' स्पेस है दोनों नर और मादा है। (मास्टर्स लेटर्स 111, क्रोनोलॉजिकल एडीसन पृ0 379)

ग्रीक दार्शनिक जिसनें कहा है कि यूनीवर्स एक विशालकाय पशु है, पाइथागोरियन मोनॉड के प्रतीकात्मक महत्व में प्रविष्ट होता है। (जो दो और फिर तीन हो जाता है – त्रिभुज, और अन्त में टेट्रैक्टिस या पूर्ण वर्ग, इस प्रकार अपनें 4 विकसित करता है और इसमें तीन सम्मिलित करके पवित्र सात बनाता है) – और इस प्रकार वर्तमान समय के वैज्ञानिकों से कहीं अधिक एडवांस थे। (मास्टर्स लेटर्स, 65 क्रोनोलॉजिकल एडीशन, पृ0 168)

आधुनिक विज्ञान नें यह पहचान कर ली है कि प्रकृति के सारे उच्च नियम परिमाण परक कथनों का रूप ले लेते हैं। सम्भवतः यह

पाइथागोरियन सिद्धांत का अपेक्षाकृत अधिक पूर्णता से विस्तार है या अधिक अभिव्यक्त मान्यता है। संख्याओं को पूरे यूनीवर्स में फैली समरसता के नियम का सर्वोत्तम प्रतिनिधि माना जाता है। हम जानते हैं कि रसायन शास्त्र में परमाणुओं और उनके संश्लेषण का सिद्धांत संख्याओं से अनियंत्रित ढंग से परिभाषित होता है। जैसा मि0 डब्ल्यू आर्कर बटलर नें कहा है, ''तब, संसार अपनें सात विभागों के माध्यम से, एक जीवित अंकगणित जो विकास में है जिसका आश्रय वास्तवीकृत रेखागणित में है।''

संख्याओं का ब्रह्मण्डीय सिद्धांत जिसे पाइथागोरस नें मिश्र के हायरोफैंट्स से सीखा वह अकेले ही दो इकाइयों को समझनें में समर्थ है, पदार्थ और आत्मा और प्रत्येक को गणित के सहारे प्रदर्शित करनें का कारण है।

शाश्वतता की महान समस्या का हल न तो धार्मिक अंधविश्वास में है और न पूर्ण भौतिकता में समरसता और बराबरी दोहरे विकास – आध्यात्मिक और भौतिक – की व्याख्या केवल पाइथागोरस की संख्याओं से होता है, जिसनें अपना प्रक्रम पूरी तरह से हिन्दू वेदों की तथाकथित ''मेट्रिकल स्पीच'' से निर्मित किया है। दोनो का एसॉटेरिक महत्व का आंकलन संख्याओं के आधार पर किया जाता है – आत्मिक का उनकी संख्याओं के मिस्टिक संबंधों से मानव मस्तिक की मेधा में आता है। और भौतिक का शब्दांशों की संख्या के आधार पर जो प्रत्येक छंद या मंत्र के शब्दों में विद्यमान हैं। प्लैटो, पाइथागोरस के उत्साही शिष्य, नें इसे इतनी पूर्णता से वास्तवीकृत किया कि वे मानते रहे कि डोडेकाहेड्रान एक ज्योमेट्रिकल आकार है जिसे डेमिअर्गस ने यूनीवर्स के निर्माण के लिये इसका प्रयोग किया। यह एक पूर्ण वर्ग है जिसकी भुजायें लम्बाई में एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न नहीं हैं। वह नैतिक न्याय और दिव्य बराबरी का प्रतीक–चिह्न है जिसे ज्योमेट्रिकली अभिव्यक्त किया गया है। आध्यात्मिक और भौतिक प्रकृतियों के संगीत की सारी शक्तियां और उसका अमिट नाम परफेक्ट वर्ग में अंकित हैं, जो नाम अन्यथा अकथनीय रहता है, पवित्र संख्या 4 से स्थानान्तरित कर दिया गया है, प्राचीन रहस्य विदों के समक्ष ली गयी सर्वाधिक बन्धकारी और गम्भीर प्रतिज्ञा – टेट्राक्टिस।

पाइथागोरस कहते हैं कि ''संख्या आठ जो पहला क्यूब है, जो कि जो सारे भावों से वर्ग है, एक सांचे के रूप में जो अपने बेस दो से प्रारम्भ होता है या 'इवेन संख्या'; वैसे ही मनुष्य चार – वर्ग या परफेक्ट'' (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 2, पृ0 410)

संख्या सात – इस संख्या की सम्भावनाओं को समझनें के लिये व्यक्ति को पाइथागोरियन्स या कबालिस्टों से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये। बाह्य दृष्टिकोण से समझनें के लिये, सौर किरणों के सात रंगों के स्पेक्ट्रम में सात किरणों वाला देवता हेप्टैक्टिस का स्पष्ट मूर्त रूप दिखाई देता है। ये सात किरणें सार रूप में तीन प्राथमिक किरणों में व्यक्त हो जाती हैं – लाल, नीला और पीला और सौर त्रिमूति बनाती हैं और क्रमशः आत्मा–पदार्थ और आत्मा–सार को प्रकट करती हैं। विज्ञान नें भी हाल ही में इन सात किरणों को प्राथमिक तीन किरणों में समाहित होनें को मान लिया है। इस प्रकार पुरातन काल के मनीसियों की इस वैज्ञानिक धारणा का समर्थन किया है कि सात के चार और तीन जो अदृश्य एक की तीन अभिव्यक्तियां हैं, में विभाजित होते हैं।

पाइथागोरियन्स संख्या 7 को जीवन का वाहन कहते हैं। क्योंकि यह शरीर और आत्मा दोनों में समाहित है। वे यह कह कर इसकी व्याख्या करते थे कि मानव शरीर में चार प्रधान तत्व होते हैं और आत्मा तिहरी है, जिसमें तर्क, भावना और कामना होती है। (आइसिस अन्वील्ड खण्ड 2, पृ0 418)

(क्रमशः . . . . . .)

समाचार और टिप्पणियां

बाम्बे

अंतर्राष्ट्रीय टीएस कन्वेन्शन, अडयार में यद्यपि बाम्बे थिऑसफिकल फेडरेशन के प्रतिनिधि बहुत कम थे फिर भी उनका सहभागित्व विशेष प्रकार का था। नव वर्ष के 1 जनवरी 2024 को 'एक्सप्लोरिंग और अण्डरस्टैंडिंग' पर हुये सिंपोज़ियम की अध्यक्षता बीटीएफ अध्यक्ष बन्धु विनायक पांड्या नें की। इसके अतिरिक्त उन्होंनें भारतीय सेक्शन कन्वेंशन–1 में बीटीएफ का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंनें साधारण काउन्सिल ऑफ टीएस (अंतर्राष्ट्रीय) और भारतीय सेक्शन काउन्सिल की बैठक में भी भाग लिया। बीटीएफ कोषाध्यक्ष, ह्रदय से कलाकार, बन्धु तरल मुंशी नें कला के अन्यान्य रूपों के प्रसार से थिऑसफिकल मूल्यों में 'थिऑसफी बाई आर्ट' की धारणा को सुदृढ़ किया।

दि0 1 जनवरी 2024 की संध्या में बन्धु तरल मुंशी नें हिन्दी में और बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें अंग्रेजी में 'मानवता' के लिये नाटक और संगीत के माध्यम से संदेश दिया। मंचन का पहला भाग एक नुक्कड़ नाटिका थी जो होली फेथ हाई स्कूल मुंबई के विद्यार्थियों नें प्रस्तुत किया था। नाटिका का प्रारम्भ इस प्रश्न से हुआ कि मानवता कहां है? का अन्त इस समाधान से हुआ कि मानवता मनुष्य के अंतर में है। 'चलो हम इसे जगाते हैं। चलो हम मानवता के वाहक बन जाते हैं।' दूसरा भाग बीट क्वायर था (बैंक एम्प्लाईज़ आर्ट ग्रुप) उनके शिक्षक के द्वारा संचालित बहन राजेश्वरी नें अंग्रेजी, स्पैनिश, हिन्दी, तमिल और बंगला में गाने प्रस्तुत किये। यह एक संगीत मय यात्रा थी जो 'लेट देयर बी पीस ऑन अर्थ' से प्रारम्भ हो कर 'जीना इसी का नाम है' में समाप्त हुयी। इस पर अनेकों नें नृत्य किया जिसमें अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय सचिव मार्जा आर्तमा भी सम्मिलित हुये। कार्यक्रम को अडयार थियेटर में उपस्थित 600 लोगों नें और 1000 से अधिक लोगों जो यू ट्यूब पर ऑन लाइन साझा कर रहे थे हतप्रभ हुये।

बन्धु आर्नी नरेन्द्रन वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ यंग थिऑसफिस्ट के मानद निर्देशक के रूप में 'फ्लायर' की व्यवस्था में व्यस्त रहे जब आईएफवाईटी के 100 वर्ष पूरे होनें के उपलक्ष में कान्फरेंस के साथ अडयार में दिसम्बर 2023 में आयोजित किया जा रहा था।

बन्धु विनायक पाण्ड्या 24 से 26 नवम्बर तक गुजरात थिआसफिकल फेडरेशन

के 93 वार्षिक सम्मेलन के गेस्ट ऑफ आनर थे, कडोली जो हिम्मतनगर के पास हैं में आयोजित हुआ। बन्धु पाण्ड्या नें (1) 'ब्रह्म विद्या नो आश्वाद' और (2) 'हरजीवन सौरभ नू सत्व' विषयों पर आयोजित सिम्पोजियमों की अध्यक्षता की।

बहन जीना रस्तमजी की पेन्टिंग्स जो उन्होंनें 19 वर्ष की आयु में बनाई थीं भारत और विदेशों की महिलाओं जो इण्डस इंटरनेशनल, मुम्बई की सदस्य थीं की पेन्टिंग्स के साथ प्रदर्शित की गयीं।

डा0 राजम पिल्लै एसएनडीटी यूनीवर्सिटी में मुख्य अतिथि रहीं और उनको एसएनडीटी यूनीवर्सिटी का ''विश्व हिन्दी दिवा'' एवार्ड से सम्मानित किया गया।

बहन फ्रेनी पगड़ीवाला को उनके क्रिस्टल कोरल नें उनके प्रिय आनन्ददायक गीतों को गा कर श्रद्धांजलि दी। ब्लैवैत्सकी लॉज, शांति लॉज, मिस्टिक स्टार रिचुअल समूह, मैत्रेय राउंड टेबल, जोन्टा इंटरनेशनल के सदस्यों नें भी श्रद्धांजलियां दीं।

मद्रास

बन्धु टिम बॉयड थिऑसफिकल सोसाइटी के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, नें रविवार 7 जनवरी 2024 को टीएस के मुख्यालय में एक वक्तव्य दिया। इसी अवसर पर उन्होंनें नये सदस्यों को डिप्लोमा हस्तान्तरित किया और उनको अध्ययन, ध्यान और सेवा कार्य करनें के लिये प्रोत्साहित किया, जो उनको प्रज्ञान तक ले जायेगा।

फेडरेशन के द्वारा अडयार और गांधीनगर लॉज के सहयोग से 'थिऑसफी का परिचय' पर दि0 21 जनवरी 2023 को एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया। बक्ताओं में डा0 आर. रेवती और प्रो0 सी.ए. शिन्दे थे। डा0 रेवती नें डा0 बेसैंट की 'थिऑसफिकल जीवन' के आधार पर वार्ता की और थिऑसफी के मिशन के साथ उसकी सुन्दर व्याख्या, कर्म और पुनर्जन्म के उद्देश्य इस धारणा के उसके महत्व की व्याख्या की। उसके पश्चात प्रो0 शिन्दे नें थिऑसफी की तीन मणियां, जे. कृष्णमूर्ति की ऐट द फीट ऑफ द मास्टर, एच.पी. ब्लैवैत्सकी की वायस ऑफ द साइलेंस और मेबल कालिंस की लाइट ऑन द पाथ की व्याख्या करते हुये बताया कि इन तीनों पुस्तकों की रचना मास्टरों द्वारा की गयी है जिनको अनके प्रेरित शिष्यों के माध्यम से संसार में

लाया गया है। इनकी उन्मुक्त प्रशंसा करते हुये उन्होंनें बताया कि हमारी सारी गतिविधियां इन्हीं पर आधारित हैं।

उ.प्र. और उत्तराखण्ड

धर्म लॉज, लखनऊ में बन्धु बी.के. पांडेय नें दि0 3, 17, 24, और 31 जनवरी को 'भगवद्गीता के अध्ययन पर संकेत' विषय पर व्याख्यान माला प्रस्तुत की। दि0 10 जनवरी को बन्धु अशोक कुमार गुप्ता नें इसी विषय पर चर्चा की।

निर्वाण लॉज आगरा में 'मृत्यु के बाद के जीवन' विषय पर दि0 4 जनवरी को एक परिचर्चा आयोजित हुई। दि0 11, 18 और 25 जनवरी को बन्धु प्रवीण मेहरोत्रा, बन्धु डीएस राठौर और बन्धु एचबी पाण्डेय नें क्रमशः 'अडयार दिवस', 'आध्यात्मिक प्रभाव का नशा', और 'कर्म, अकर्म और विकर्म' विषयों पर वक्तव्य दिये। इसके अतिरिक्त 14 जनवरी को बन्धु ज्ञानीश कुमार चतुर्वेदी द्वारा भारत समाज पूजा का आयोजन किया गया।

ब्रह्मविद्या लॉज जिगना जि0 गोरखपुर नें दि0 22 जनवरी को 'श्री राम के जीवन से शिक्षायें' विषय पर बन्धु शेशनाथ त्रिपाठी नें एक वक्तव्य दिया।

सर्व हितकारी लॉज गोरखपुर में दि0 10 और 14 फरवरी को बन्धु एसबीआर मिश्र और बन्धु डा0 अजय राय नें क्रमशः 'मैं कौन हूं' और 'अहिंसा परमो धर्मः' विषयों पर चचायें कीं।

सत्य धर्म लॉज ग्राम जिगना जि0 कुशीनगर में बन्धु एसबीआर मिश्र नें दि0 13 जनवरी को 'शाश्वत प्रज्ञान का दर्शन' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

नोयडा लॉज नोयडा में दि0 7 और 21 जनवरी को 'निर्वाण' पुस्तक पर सामूहिक अध्ययन किया गया।

चोहान लॉज कानपुर में बन्धु एसएस गौतम नें जनवरी के प्रथम और चतुर्थ रविवार को 'स्वयं अपने मार्ग बनो' और 'एक मार्ग' विषयों पर चर्चायें कीं।

आनंद लॉज, प्रयागराज में बन्धु के. के. जायसवाल नें जनवरी के प्रथम और द्वितीय गुरुवार को 'सेवा और त्याग' और 'आत्म नियंत्रण' विषयों पर व्याख्यान दिये।

काशी तत्व सभा, वाराणसी में दि0 4 जनवरी को सपोर्ट कन्वेंशन आयोजित किया गया जिसमें डा0 शान्ता चटर्जी नें थीम 'यूनीवर्सल इन्टलीजेंस' पर वार्ता की।

विद्यार्थिओं / शिक्षकों से वार्तायें:

बहन वासुमती अग्निहोत्री ने बप्पा श्री नारायण कॉलेज लखनऊ में दि0 30 जनवरी को 'जीवन में सफलता–असफलता अवसाद–आत्महत्या को कैसे व्यवस्थित करें' विषय पर विद्यार्थियों और शिक्षकों के एक समूह से वार्ता की।

राष्ट्रीय वक्ता

बन्धु यूएस पाण्डेय नें राजमुंदरी लॉज (तेलगू फेडरेशन) दि0 6 और 10 जनवरी को 'सीक्रेट डाक्ट्रीन' पर अध्ययन संचालित किया। इस अध्ययन में तेलगू फेडरेशन के अतिरिक्त अनेक अन्य लॉजों के सदस्यों ने भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त उन्होंनें एक वक्तव्य 'दिव्य प्रज्ञान और विज्ञान' विषय पर दि0 11 जनवरी को गुण्टूर लॉज (रायलसीमा फेडरेशन) में प्रस्तुत किया। श्री कृष्णा लॉज अमरावती (मराठी फेडरेशन) में दि0 28 जनवरी को 'रिजुवनेशन ऐण्ड ट्रान्सफार्मेशन बाई अवेयरनेस' विषय पर एक वक्तव्य दिया। वहीं पर उन्होंनें 29 जनवरी से 2 फरवरी तक थिऑसफिकल ब्लूम्स पुस्तक पर अध्ययन संचालित किया।

बहन सुषमा श्रीवास्तव नें शंकर लॉज (दिल्ली फेडरेशन) में 'कम्परेटिव धर्म – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर दि0 20 जनवरी को एक ऑन लाइन वार्ता प्रस्तुत की।

बन्धु एस.एस. गौतम नें शंकर लॉज, दिल्ली फेडरेशन में दि0 24 जनवरी को 'ट्रान्सफार्मेशन रिक्वायर्ड फॉर सेल्फ रियलाइजेशन' विषय पर एक ऑन लाइन वक्तव्य दिया।

भारतीय सेक्शन के कार्यों और कार्यक्रमों में योगदानः

बन्धु एस.एस. गौतम नें सेक्शन की मासिक पत्रिका 'इण्डियन थिऑसफिस्ट' के फरवरी 2024 अंक का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया।

बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें भारतीय सेक्शन के तत्वधान में दि0 21 जनवरी को महात्मा पत्र सं0 91 और 92 (भाग 1) ऑन लाइन प्रस्तुत किया।

यंग इण्डियन थिऑसफिस्ट्स के लिये योगदानः

बन्धु चकित स्वरूप, गाजियाबाद, नें 28 जनवरी को 'अपनें को जानना स्वयं में प्रज्ञान है' विषय पर एक ऑन लाइन वार्ता यंग इण्डियन थिऑसॉफिस्ट्स, भारतीय सेक्शन, के तत्वधान में प्रस्तुत की।

अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, अडयार, के कार्यक्रमों के लिये सहयोगः

बन्धु यूएस पांडेय नें दि0 16 से 26 जनवरी की अवधि में स्कूल ऑफ विज्डम के कार्य क्रम में सहभागिता की और दि0 25 जनवरी को 'साइंस ऑफ सोल' विषय पर एक वक्तव्य भी दिया।

अन्य मंचों के कार्यक्रमों में योगदानः

बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें 'चेतना का विकास' विषय पर 26 जनवरी को पुरी के एक संगठन 'आर्ट ऑफ ब्लिस' के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में एक वक्तव्य दिया। दि0 28 जनवरी को उन्हीं के कार्यक्रम को मॉडरेट किया।

वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ यूथ थिऑसफिस्ट्स

मैं चाहूंगा कि आप अगले अंतर्राष्ट्रीय यूथ गैदरिंग के बारे में जानें जो कि 22–27 जून 2024 को हिमालयन थिऑसफिकल सेन्टर भुवाली में होनें वाला है। अधिक सूचनायें बाद में उपलब्ध कराई जायेंगीं।

यदि कोई युवा थिआसफिस्ट इसमें भाग लेने में रुचि रखते हों और उनका कोई प्रश्न है तो वे हमसे संपर्क करनें के लिये स्वतंत्र हैं।

क्योंकि यह भारत में संपन्न होगा हम युवा थिऑसफिस्टों का उन्नयन करना चाहेंगे।

आपके कोऑपरेशन के लिये बहुत सारा धन्यवाद।

सारा
बोर्ड ऑफ डब्ल्यू एफ वाई टी
कम्युनिटी ऑफीसर
ईमेल sara.ovanvloten@gmail.com